राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

तीन/ चार वर्षीय स्नातक कार्यक्रम

वाणिज्य संकाय

कार्यक्रम का नाम: UG-MDC –तीन/चार वर्षीय वाणिज्य स्नातक (व्यावसायिक प्रशासन)

बी. कॉम. (MDC)
विषय –व्यावसायिक प्रशासन

(एनईपी-2020 और च्वाइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम के अनुसार पाठ्यक्रम)

शिक्षण का माध्यम: हिंदी/ अंग्रेजी

शैक्षणिक सत्र 2025-26

कार्यक्रम का नाम: तीन/चार वर्षीय वाणिज्य स्नातक

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

पाठ्यक्रम का शीर्षक: व्यवसाय संचार कौशल
पेपर कोड: UG-MDC-BDM-63T-201
सेमेस्टर: III

सेमेस्टर	पाठ्यक्रम का कोड	पाठ्यक्रम/पेपर का शीर्षक	NHEQF स्तर	क्रेडिट
III	UG-MDC-BDM-63T-201	व्यवसाय संचार कौशल	6	4
पाठ्यक्रम का स्तर	पाठ्यक्रम का प्रकार	पाठ्यक्रमकावितरणप्रकार		
प्रारंभिक	MDC	व्याख्यान - प्रति सप्ताह चार घंटे		

परीक्षा की अवधि	अधिकतम अंक	न्यूनतम अंक
मिडटर्म -1 घंटा EoSE-3 घंटे	मिडटर्म-20 अंक EoSE-80 अंक	मिडटर्म -8 अंक EoSE-32 अंक

विस्तृत पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम के उद्देश्य:

1. छात्रों को संचार के बारे में व्यापक दृष्टिकोण, व्यवसाय में इसका दायरा और महत्व, और फर्म के बाहर एक अनुकूल वातावरण स्थापित करने में संचार की भूमिका, साथ ही एक प्रभावी आंतरिक संचार कार्यक्रम प्रदान करना।
2. विभिन्न प्रकार के व्यवसाय संचार माध्यमों को समझना।

इकाईI: परिचय: व्यवसाय संचार की अवधारणा, उद्देश्य और महत्व, प्रभावी संचार के सिद्धांत, संचार के प्रकार। संचार का माध्यम: लिखित, मौखिक, प्रत्यक्ष्य, दृश्य, श्रव्य-दृश्य, आधुनिक माध्यम- टेलेक्स, फैक्स, टेली कॉन्फ्रेंसिंग। ईमेल माध्यम, गैर-मौखिक संचार, काइनेसिक्स प्रभाव, वास्तविकता की समझ।
इकाईII: संचार में बाधाएँ: मीडिया का गलत चयन, भौतिक बाधाएँ, शब्दार्थ बाधाएँ, वास्तविकता की अलग समझ। सामाजिक-मनोवैज्ञानिक बाधाएँ।
इकाईIII: व्यावसायिक पत्र: लेआउट, व्यावसायिक पत्र के प्रकार - साक्षात्कार, नियुक्ति, पावती, पदोन्नति, पूछताछ, उत्तर, आदेश, बिक्री, परिपत्र, शिकायतें।
इकाईIV: व्यावसायिक संचार के व्यावहारिक पहलू: रिपोर्ट लेखन, सार्वजनिक भाषण, सेमिनार, प्रस्तुति, साक्षात्कार, समूह चर्चा, प्रभावी श्रवण।

सुझाई गई पुस्तकें और संदर्भ:

1. के.के. सिना, बिजनेस कम्युनिकेशन, गलगोटिया पब्लिशर्स कोऑपरेटिव। नई दिल्ली।
2. सी.एस. रायडू, मीडिया और संचार प्रबंधन, हिमालय पब्लिशिंग हाउस, बॉम्बे।
3. राजेंद्र पाल एवं जे.एस. कोरलहली, एसेंशियल्स ऑफ बिजनेस कम्युनिकेशन, सुल्तान चंद एंड संस, नई दिल्ली।
4. निर्मल सिंह, बिजनेस कम्युनिकेशन (सिद्धांत, तरीके और तकनीक), डीप एंड डीप पब्लिकेशन प्राइवेट

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

लिमिटेड, नई दिल्ली।

5. आर.सी. शर्मा, कृष्ण मोहन, बिजनेस कॉरेस्पोंडेंस एंड रिपोर्ट राइटिंग, टाटा मैकग्रा-हिल पब्लिशिंग कंपनी लिमिटेड, नई दिल्ली।
6. एम. बालासुब्रमण्यम, बिजनेस कम्युनिकेशन, वाणीएजुकेशन बुक्स।

पाठ्यक्रम सीखने के परिणाम:

1. आज की तकनीक की मांग के अनुसार बुनियादी और उन्नत सही लेखन तकनीकों का उपयोग समझना और प्रदर्शित करना, जिसमें श्रोताओं की प्रतिक्रिया की प्रत्याशा शामिल हो।

2. प्रभावी और संक्षिप्त पत्र और मेमो लिखना।

3. अनौपचारिक और औपचारिक रिपोर्ट तैयार करना, व्यवसाय पत्राचार की प्रतिलिपियों को प्रूफरीड और संपादित करना।

4. बैठकों के लिए सफलतापूर्वक योजना बनाना और उनमें भाग लेना और टेलीफोन के उपयोग में उचित तकनीकों का पालन करना, ईमेल का प्रभावी और कुशल उपयोग करना ।

5. उन अंतरव्यक्तिगत कौशलों को विकसित करना जो प्रभावी और संतोषजनक व्यक्तिगत, सामाजिक और पेशेवर संबंधों में योगदान करते हैं, और इलेक्ट्रॉनिक प्रस्तुति सॉफ्टवेयर का उपयोग करना ।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

कार्यक्रम का नाम: चार वर्षीय वाणिज्य स्नातक

पाठ्यक्रम का शीर्षक: ई-कॉमर्स

पेपर कोड:UG-MDC-BDM-64T-202

सेमेस्टर: IV

सेमेस्टर	पाठ्यक्रम का कोड	पाठ्यक्रम/पेपर का शीर्षक	NHEQF स्तर	क्रेडिट
IV	UG-MDC-BDM-64T-202	ई-कॉमर्स	6	4
पाठ्यक्रम का स्तर	पाठ्यक्रम का प्रकार	पाठ्यक्रमकावितरणप्रकार		
मध्यवर्ती	MDC	व्याख्यान - प्रति सप्ताह चार घंटे		

परीक्षा की अवधि	अधिकतम अंक	न्यूनतम अंक
मिडटर्म -1 घंटा EoSE-3 घंटे	मिडटर्म-20 अंक EoSE-80 अंक	मिडटर्म -8 अंक EoSE-32 अंक

विस्तृत पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम के उद्देश्य:

छात्रों को ई-कॉमर्स की अवधारणाओं और तकनीकों से परिचित कराना और ई-कॉमर्स के समकालीन अनुप्रयोगों के लिए कौशल को बढ़ाना।

इकाईI: ई-कॉमर्स का परिचय; ई-कॉमर्स का दायरा, ई-कॉमर्स आधारित गतिविधियाँ, ई-कॉमर्स के तकनीकी घटक, ई-कॉमर्स अनुप्रयोग, ई-कॉमर्स का फ्रेमवर्क, आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन, ई-कॉमर्स और ई-बिजनेस, एम-कॉमर्स, विशुद्धऑनलाइन बनाम ब्रिक एंड क्लिक बिजनेस।

इकाईII: ऑनलाइन व्यवसाय की योजना बनाना; इंटरनेट की प्रकृति और गतिशीलता, इलेक्ट्रॉनिक व्यावसायिक मॉडल, बी2बी, बी2सी, सी2सी, सी2बी, बी2जी, वेबसाइट डिजाइनिंग, ऑनलाइन व्यवसाय के लिए आवश्यकताओं का आकलन, प्रणाली का डिजाइन, विकास और तैनाती।

इकाईIII: ई-कॉमर्स का संचालन; ऑनलाइन भुगतान तंत्र, इलेक्ट्रॉनिक भुगतान प्रणाली, भुगतान गेटवे, वेबसाइटों के आगंतुक, वेबसाइटों को बढ़ावा देने के लिए उपकरण, ई-भुगतान प्रणालियों के लिए जोखिम प्रबंधन विकल्प।

इकाईIV: ई-कॉमर्स के सुरक्षा और कानूनी पहलू; ई-कॉमर्स में खतरे, ग्राहकों और सेवा प्रदाता की सुरक्षा, साइबर कानून - सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम 2000 के प्रासंगिक प्रावधान: अपराध, सुरक्षित इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड और डिजिटल हस्ताक्षर, दंड, न्यायनिर्णयन।

सुझाई गई पुस्तकें और संदर्भ:

- अग्रवाल, कमलेश एन., लाल, अमित और अग्रवाल, दीक्षा। "नेट पर व्यवसाय: ई-कॉमर्स के क्या और कैसे का एक परिचय।" मैकमिलन इंडिया लिमिटेड

Dy. Registrar (Academic) University of Rajasthan JAIPUR

- बजाज केके, देबजानी नाग ई-कॉमर्स। टाटा मैकग्रा हिल कंपनी नई दिल्ली।
- छाबड़ा, टी.एन., जैन, हेम चंद, जैन, अरुणा। "एचटीएमएल का एक परिचय" धनपत राय एंड कंपनी।
- डाइटेल, हार्वे एम., डाइटेल, पॉल जे., और स्टीनबुहलर केट। प्रबंधकों के लिए ई-बिजनेस और ई-कॉमर्स। पियर्सन शिक्षा.
- दीवान, पराग और शर्मा, सुनील इलेक्ट्रॉनिक कॉमर्स- ई-बिजनेस के लिए एक प्रबंधक की मार्गदर्शिका। वैनिटी बुक्स इंटरनेशनल, दिल्ली।
- इलियास एम. अवाद इलेक्ट्रॉनिक कॉमर्स दृष्टि से पूर्ति तक, तीसरा संस्करण। पीएचआई प्रकाशन।
- तरबन, ई., एट अल. इलेक्ट्रॉनिक कॉमर्स: एक प्रबंधकीय परिप्रेक्ष्य। पियर्सन एजुकेशन एशिया।

पाठ्यक्रम को सीखने के परिणाम:

1. ई-कॉमर्स की मूल बातें, वर्तमान और उभरते व्यवसाय मॉडल को समझना।
2. वेब पर बिक्री, विपणन, मानव संसाधन आदि जैसे बुनियादी व्यावसायिक संचालन से परिचित होना।
3. ई-भुगतान के उभरते तरीकों की पहचान करना।
4. ई-कॉमर्स की सुरक्षा, गोपनीयता, नैतिक और कानूनी मुद्दों के महत्व को समझना।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

कार्यक्रम का नाम: चार वर्षीय वाणिज्य स्नातक (पास कोर्स)

पाठ्यक्रम का शीर्षक: ट्रेड यूनियंस और औद्योगिक संबंध

पेपर कोड:UG- MDC-BDM-75T-301

सेमेस्टर: V

<table>
<tr><th>सेमेस्टर</th><th>पाठ्यक्रम का कोड</th><th colspan="2">पाठ्यक्रम/पेपर का शीर्षक</th><th>NHEQF स्तर</th><th>क्रेडिट</th></tr>
<tr><td>V</td><td>UG- MDC-BDM-75T-301</td><td colspan="2">ट्रेड यूनियंस और औद्योगिक संबंध</td><td>7</td><td>4</td></tr>
<tr><th>पाठ्यक्रम का स्तर</th><th>पाठ्यक्रम का प्रकार</th><th colspan="4">पाठ्यक्रमकावितरणप्रकार</th></tr>
<tr><td>उच्च स्तर</td><td>MDC</td><td colspan="4">व्याख्यान - प्रति सप्ताह चार घंटे</td></tr>
<tr><th colspan="2">परीक्षा की अवधि</th><th colspan="2">अधिकतम अंक</th><th colspan="2">न्यूनतम अंक</th></tr>
<tr><td colspan="2">मिडटर्म -1 घंटा
EoSE-3 घंटे</td><td colspan="2">मिडटर्म-20 अंक
EoSE-80 अंक</td><td colspan="2">मिडटर्म -8 अंक
EoSE-32 अंक</td></tr>
</table>

विस्तृत पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम के उद्देश्य:

छात्रों को ट्रेड यूनियनों और औद्योगिक संबंधों की अवधारणाओं और व्यावहारिक अनुप्रयोगों से परिचित कराना।

इकाई I:ट्रेड यूनियनवाद: अर्थ, क्षेत्र, महत्व और उद्देश्य। ट्रेड यूनियनवाद के सिद्धांत (हॉक्सी, वेब्स, कार्ल मार्क्स, महात्मा गांधी)। भारत में ट्रेड यूनियनों का इतिहास। भारत में ट्रेड यूनियनों की संरचना।

इकाईII: वेतन, श्रम कल्याण, प्रशिक्षण और शिक्षा, सामाजिक सुरक्षा, सामाजिक जिम्मेदारी के प्रति जागरूकता, पर्यावरण जागरूकता के संदर्भ में ट्रेड यूनियनों के कार्य। ट्रेड यूनियनों की समस्याएँ - बहुलता, इंटर और इंट्रा-यूनियन प्रतिद्वंद्विता, राजनीतिक हस्तक्षेप, तकनीकी प्रगति।

इकाईIII: औद्योगिक संबंध: क्षेत्र और महत्व – औद्योगिक विवादों के कारण और परिणाम – औद्योगिक संबंधों में हाल के रुझान।

इकाईIV: सामूहिक सौदेबाजी– भारत में सीबी प्रथाएं – भागीदारी प्रबंधन के रूप और स्तर – भारत में प्रबंधन में श्रमिकों की भागीदारी की योजनाएँ।

सुझाई गई पुस्तकें और संदर्भ:

1. वेंकट रत्नम, सी.एस. - औद्योगिक संबंध, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
2. एससी श्रीवथव, औद्योगिक संबंध और श्रम कानून, विकास, एनडी।
3. एम.अरोड़ा: औद्योगिक संबंध, एक्सेल प्रकाशन।

Dy. Registrar (Academic) University of Rajasthan JAIPUR

4. पी.आर.एन.सिन्हा, इंदु बाला सिन्हा और सीमा प्रियदर्शनी शेखर, "औद्योगिक संबंध, ट्रेड यूनियन और श्रम विधान", पियर्सन एजुकेशन, नई दिल्ली।
5. रत्ना सेन, "भारत में औद्योगिक संबंध", मैकमिलन इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली।

पाठ्यक्रम को सीखने के परिणाम:

1. छात्र औद्योगिक सेटअप में ट्रेड यूनियन की भूमिका को स्पष्ट करने में सक्षम होंगे।
2. छात्र औद्योगिक संबंधों की अवधारणा को विस्तृत रूप से समझने में सक्षम होंगे।
3. छात्र औद्योगिक विवाद निपटान प्रक्रियाओं को विस्तृत रूप से समझने में सक्षम होंगे।
4. छात्र सामूहिक सौदेबाजी और प्रबंधन में श्रमिकों की भागीदारी को विस्तृत रूप से समझने में सक्षम होंगे।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR